

राज्य में ग्वार का एक्सपोर्ट जोन बनाने के होंगे प्रयास— कृषि मंत्री



राज्य में ग्वार का एक्सपोर्ट जोन बनाने के प्रयास किए जायेंगे। इस जोन के बनने से जहाँ एक ओर राज्य में निवेश बढ़ेगा वहीं दूसरी ओर किसानों को उनकी उपज की सही कीमत मिलेगी। कृषि मंत्री श्री प्रमो लाल सैनी 17 नवम्बर को होटल क्लार्क्स आमेर में ग्वार पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन

समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्व में ग्वार का सर्वाधिक उत्पादन भारत में होता है और देश में ग्वार का सर्वाधिक उत्पादन राजस्थान में होता है। राज्य में ग्वार प्रसंस्करण उद्योगों की भरपूर सम्भावनाएँ हैं, इसलिए इस क्षेत्र में निवेश के लिए निवेशकों को प्रोत्साहित किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि ग्वार प्रसंस्करण के क्षेत्र में कई दिक्कतें हैं, जिन्हें दूर करने की जरूरत है। राज्य सरकार द्वारा भी इस क्षेत्र की समस्याओं को दूर करने के प्रयास किए जायेंगे। राज्य सरकार द्वारा कृषि प्रसंस्करण एवं निर्यात प्रोत्साहन नीति इसी उद्देश्य से लॉन्च की गई है।

कृषि मंत्री ने कहा कि नेशनल एग्री मार्केट के तहत राज्य की 15 मंडियों में ई-ट्रेडिंग की व्यवस्था शुरू कर दी गई

है। इस व्यवस्था से जहाँ व्यापारियों को सही कीमत पर अच्छी गुणवत्ता का माल उपलब्ध हो सकेगा, वहीं किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य मिलेगा। इस

अवसर पर जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के प्रमुख शासन सचिव श्री जे.सी. मोहनन्ती सहित देश-विदेश से आए अनेक व्यापारी उपस्थित थे।

सरकार की गाय व ऊँट के संरक्षण के लिए काम करने की मंशा - गोपालन राज्य मंत्री

गोपालन राज्य मंत्री श्री ओटाराम देवासी ने कहा कि राज्य सरकार गाय व ऊँट के संरक्षण व कल्याण के लिए काम करने की मंशा रखती है। गोपालन राज्य मंत्री 8 नवम्बर को पाली जिले के राजपुरा में मारवाड़ केमल कल्चरल फेस्टिवल के समापन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा यदि पशुओं को आय का साधन बनाया जाये तो उनके संरक्षण में आसानी होगी। गाय और ऊँट दोनों ही महत्वपूर्ण पशु हैं, राज्य सरकार इनके संरक्षण के लिए कार्य कर रही है। गोपालन राज्य मंत्री ने कहा कि ऊँट की तस्करी को रोकने के लिए राज्य सरकार कृतसंकल्प है। ऊँट के दूध को भी फूड एक्ट में लेने, इसके अपशिष्ट से कागज बनाने एवं इसकी ऊन से कई उत्पाद तैयार करने के कार्य हो रहे हैं। जब तक ऊँट से आय के साधन नहीं बनेंगे तब तक समस्या का समाधान नहीं होगा। उन्होंने कहा कि ऊँट के दूध पर अनुसंधान से कई बीमारियों के इलाज करने में भी सहायता मिलेगी।

राज्य सरकार इस दिशा में प्राथमिकता

से कार्य कर रही है और ऊँट व गाय के लिए दिसम्बर के बाद बीमा योजना भी शुरू करने के प्रयास किये जायेंगे। समारोह में उपस्थित जोधपुर के पूर्व नरेश श्री गजसिंह ने कहा कि मारवाड़ की संस्कृति में ऊँटों का विशेष महत्व है। बीकानेर व जोधपुर में ऊँट के दूध व अन्य उत्पादों पर शोध कार्य चल रहा है। ऊँट के दूध की महत्ता से लोगों को जागरूक करना है। आईस्क्रीम व पनीर भी ऊँट के दूध से बनाने की पहल हो रही है। डेयरी व फूड एक्ट में भी ऊँट के दूध की उपयोगिता के बारे में अधिक से अधिक लोगों को जानकारी देनी होगी। उन्होंने कहा कि राजस्थान में ऊँटों के संरक्षण व संवर्धन के लिए अलग से विभाग की आवश्यकता है।

इस अवसर पर लोकहित पशुपालन संस्था के निदेशक हंवलसिंह ने बताया कि ऊँटों के संरक्षण एवं कल्याण के लिए संस्था ने यह तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें 32 जिलों के लगभग 400 व्यक्तियों ने हिस्सा लिया है।

मुख्यमंत्री ने लॉन्च की अपनी नई वेबसाइट

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने 5 नवम्बर को मुख्यमंत्री कार्यालय में अपनी नई वेबसाइट www.vasundhararaje.in लॉन्च की। इस वेबसाइट पर मुख्यमंत्री के कार्यक्रमों एवं गतिविधियों से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध है।

वेबसाइट के माध्यम से मुख्यमंत्री के साथ सीधा संवाद भी संभव है। विजिटर्स द्वारा दिये गये सुझावों पर मुख्यमंत्री स्वयं साप्ताहिक समीक्षा करेंगी। इसमें श्रीमती राजे के फेसबुक पेज और ट्विटर अकाउंट को भी लिंक किया गया है।

50 लाख किसानों को बीमा योजना से जोड़ने की तैयारी

सहकारिता विभाग आगामी खरीफ से 50 लाख काश्तकारों को सहकारी ऋण सुविधा के साथ ही बीमा योजना से जोड़ने की तैयारी में है। सहकारिता मंत्री श्री अजय सिंह किलक ने कहा है कि सहकारिता विभाग ने अल्पकालीन सहकारी ऋण वितरण व्यवस्था में आमूलचूल बदलाव का निर्णय लेते हुए इस दिशा में कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि सहकारी बैंकों से ऋण लेने वाले काश्तकारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की दिशा में कार्य योजना तैयार की जा रही है। हमारा प्रयास है कि पेक्स-लेम्पस के सभी सदस्यों को ऋण मिले, ऋण राशि सीधे उनके खाते में हस्तांतरित हो और ऋणी सदस्यों को दुर्घटना बीमा के साथ ही जीवन बीमा का लाभ भी मिले। सहकारिता मंत्री ने कहा कि राज्य में एक मोटे अनुमान के अनुसार पेक्स-लेम्पस के 50 लाख सदस्य हैं। हमारा प्रयास है कि इनमें से ऋण के लिए आवेदन करने वाले चाहे सभी 50 लाख काश्तकार हों, उन्हें

निश्चित सीमा तक आवश्यक रूप से ऋण दिया जाये। इसके साथ ही इन सभी सदस्यों को दुर्घटना बीमा से जोड़ा जाये। अभी पेक्स-लेम्पस के आधे सदस्य काश्तकारों को भी फसली ऋण सुविधा का लाभ नहीं मिल पा रहा है।

श्री किलक ने बताया कि इस वर्ष विभाग द्वारा दुर्घटना बीमा में प्रिमियम की आधी राशि सहकारी बैंक द्वारा वहन करने और 50 हजार की जगह 3 लाख रुपये का बीमा लाभ देना शुरू कर दिया है। उन्होंने बताया कि दुर्घटना बीमा लाभ भी 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख करने की संभावनाओं को तलाशने के निर्देश दे दिए हैं और प्रयास है कि अगले वर्ष से 5 लाख का दुर्घटना बीमा लाभ देना शुरू कर दिया जाये।

उन्होंने बताया कि सुधारों की दिशा में आरंभिक चर्चा हो चुकी है और शीघ्र ही इसे अंतिम रूप दे दिया जायेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि आगामी खरीफ में नई ऋण व बीमा योजना का लाभ काश्तकारों को मिलना शुरू हो जायेगा।

रिमोट सेंसिंग तकनीक से कृषि में आर्यंगे व्यापक बदलाव

कृषि मंत्री श्री प्रमो लाल सैनी ने कहा कि रिमोट सेंसिंग तकनीक से कृषि क्षेत्र में व्यापक बदलाव आर्यंगे। उन्होंने बताया कि सेटलाइट इमेजिंग के जरिये प्राकृतिक आपदा, फसल स्थिति, फसल प्रणाली, कीट व रोग प्रकोप, अतिवृष्टि और अनावृष्टि के प्रभाव का आंकलन किया जा सकता है। श्री सैनी राज्य कृषि प्रबंध संस्थान में इसरो के सहयोग से "सुदूर संवेदन का कृषि क्षेत्र में उपयोग" विषय पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला का उद्देश्य सुदूर संवेदन तकनीक का कृषि क्षेत्र में समुचित लाभ लेना है। उन्होंने बताया कि कृषि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के संबंध में जीआईएस और जीपीएस के माध्यम से मृदा सुधार और हाईटेक कृषि और जल परियोजनाओं की निगरानी के लिए भी इस

तकनीक का उपयोग किया जा सकता है। मौसम विज्ञान के क्षेत्र में सौर विकिरण, तापमान, वर्षा, आर्द्रता, फसलों में पानी की कमी, कीट एवं रोग प्रकोप आदि के पूर्वानुमान में यह तकनीक उपयोगी है।

जल से ही खेती की महिमा
लेकिन जल की भी है सीमा

दरद वन के छलके वो भी है जल
फसल जिसके लिये तरसे वो भी है
जल

चिगड़ जायेगा हम सबका कल
यदि आज बचाया नहीं हमने जल

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में...

www.krishi.rajasthan.gov.in



- ▶ दिसम्बर माह के कृषि कार्य
- ▶ परख
- ▶ वैज्ञानिक तकनीक से करें...

पृष्ठ 2



- ▶ दैनिक जीवन में औषधीय...
- ▶ खुरपका-मुंहपका रोग...
- ▶ सत्त कृषि क्रियाओं द्वारा...

पृष्ठ 3



- ▶ बीजीय मसाला फसलों में.....
- ▶ लाईट ट्रेप-समन्वित कीट नियंत्रण की सुरक्षित एवं लाभकारी तकनीक

पृष्ठ 4

दिसम्बर माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

● **सरसों** की फसल में झुलसा, तुलासिता व सफेद रोली रोग के लक्षण दिखाई देते ही कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 ई.सी. या मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा रिडोमिल एम.जेड. का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार यह छिड़काव 20 दिन के अन्तराल पर दोहराएं। सफेद रोली के नियंत्रण के लिए तीसरा छिड़काव कैराथेन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से करना उपयुक्त एवं लाभदायक है।

● **गेहूँ** की पछेती किस्मों राज.-3077, राज.-3777, राज.-3765, राज.-4238 बलुई मिट्टी के लिए एवं जी.डब्ल्यू.-190,



जी.डब्ल्यू.-273, पी.बी.डब्ल्यू.-373 की बुवाई दिसम्बर माह के प्रथम पखवाड़े तक अवश्य कर दें। बीज दर 125 किलो प्रति हेक्टर रखें। गेहूँ की फसल में पहली सिंचाई शीर्ष जड़ जमने पर तथा दूसरी सिंचाई फुटान के समय अवश्य करें तथा 80-100 किलो यूरिया प्रति हेक्टर बुवाई के एक माह बाद द्वितीय सिंचाई के समय मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट अनुसार दें।

● **जौ** की दर से बुवाई हेतु सिंचित क्षेत्रों में आर.डी.-2508 की बुवाई मध्य दिसम्बर तक करें। बीज दर 125 किलो प्रति हेक्टर रखें। जल भराव वाले क्षेत्रों में दिसम्बर के अंत तक बुवाई के लिए उपयुक्त किस्में आर.डी.-2624 व आर.डी.-2660 व आर.डी. 2508 हैं।

● **गेहूँ** की फसल में समस्त खरपतवार (एक बीज पत्री एवं द्विबीज पत्री) के

नियंत्रण हेतु सल्फोसल्प्यूरीन 75 प्रतिशत + मेटासल्प्यूरीन मिथाइल 5 प्रतिशत (20 डब्ल्यू.पी.) का 32 ग्राम सक्रिय तत्व भारी मिट्टी एवं 24 ग्राम सक्रिय तत्व हल्की मिट्टी में गेहूँ की बिजाई के 30-35 दिन बाद 400-500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टर में पलेट-फेन नौजल से छिड़काव करें।

● **गेहूँ व जौ** में मकड़ी, मोयला, तैला का प्रकोप मध्य दिसम्बर से शुरु होता है। इनके नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या डायमिथोएट 30 ई.सी. एक लीटर प्रति हेक्टर की दर से 400-500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

बागवानी

● **अंगूर** की बेलों में कटाई-छंटाई करें। किस्म के अनुसार तृतीय शाखाओं पर जो कि एक वर्ष पुरानी होती हैं, उनके करीब 60 प्रतिशत कैन पर कलिकाओं की संख्या परलेट में 4-5 व थॉमसन सीडलेस एवं ब्यूटी सीडलेस में 5-8 रखनी चाहिये तथा शेष 40 प्रतिशत कैन पर दो कलिकाएं रखें। सूखी, कमजोर व रोगग्रस्त शाखाओं को काट देना चाहिये।

● **आम** के बगीचों की देखभाल करें तथा निराई-गुड़ाई व सिंचाई कर धावलों की सफाई रखें। आम के पौधों में उम्र के हिसाब से क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम वर्ष एवं 5 वर्ष से अधिक आयु के पौधों में 15, 30, 45, 60, 75 किलो गोबर की सड़ी हुई खाद दें तथा 250, 500, 750 1000 एवं 1250 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा चतुर्थ वर्ष में 250 ग्राम तथा पाँच वर्ष से अधिक उम्र के पौधों में 500 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधा दें।

● **पपीते** के बगीचे की देखभाल करें। सिंचाई व निराई-गुड़ाई करें। पपीते में 35



ग्राम यूरिया, 200 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 75 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधा दें।

● **आँवला, अमरुद व नींबू** वर्गीय फलों को विक्रय हेतु बाजार में भेजे तथा बगीचे की निराई-गुड़ाई कर सफाई रखें।

● **बेर** में इस समय छोटे-छोटे फल लग रहे हैं। यदि गत माह में उर्वरक नहीं दिया गया हो तो क्रमशः 220, 440, 1100, 1200 एवं 1200 ग्राम यूरिया प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम एवं पाँच वर्ष से अधिक उम्र के पौधों के हिसाब से प्रति पौधा दें।

सब्जियाँ

● **रबी सब्जियों** की फसल हेतु तैयार पौध की रोपाई करें तथा खेत की तैयारी के समय 400-500 क्विंटल गोबर की खाद भूमि में मिला दें। बुवाई पूर्व 100 किलो डी.ए.पी. व 60 किलो यूरिया ऊरकर दें तथा रोपाई के 30-35 दिन बाद 50 किलो यूरिया प्रति हेक्टर देकर सिंचाई करें। मिट्टी जौंच रिपोर्ट के आधार पर पोटाश व सूक्ष्म पोषक तत्व भी दें।

● **बैंगन** की रोपाई की गयी फसल की देखभाल करें। पौध रोपण के 20 दिन बाद तथा फूल लगने के समय 44-44 किलो

यूरिया दो बार देकर सिंचाई करें।

● **आलू** की बोई गयी फसल की देखभाल करें तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा 50-60 किलो यूरिया प्रति हेक्टर मिट्टी चढ़ाने के साथ दें तथा सिंचाई करें।

● **गाजर** की बोई गई फसल की देखभाल करें तथा बुवाई के 45 दिन बाद 66 किलो यूरिया प्रति हेक्टर खड़ी फसल में दें।

● **फूल गोभी** में भूरी गलन या लाल सड़न रोग बोरन तत्व की कमी के कारण होता है। गोभी के फूलों पर गोल आकार के भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं जो बाद में फूल को सड़ा देते हैं। इसके नियंत्रण हेतु फसल पर (0.3 प्रतिशत) 3 ग्राम बोरैक्स प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

● **भिच, टमाटर व बैंगन** में फलोछेदक कीट के नियंत्रण हेतु 50 प्रतिशत फूल आने पर न्यूक्लियर पोली हाइड्रोसिस वाइरस (एन.पी.वी.) 250 लटों के समतुल्य प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव बेसीलस थ्रू-नोजेन्सिस का 1.5 लीटर प्रति हेक्टर की दर से, पहले छिड़काव के 15 दिन बाद करें। तीसरा छिड़काव मैलाथियोन 50 ई.सी. दवा एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी का दूसरे छिड़काव के 15 दिन बाद करें। छिड़काव के घोल में टीपोल या सेफ़डोविट 0.1 प्रतिशत (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) जरूर मिलायें। छिड़काव यथा संभव सुबह या शाम के समय करें।

● **सब्जियों** की अगती फसल के लिए पॉलीथिन लॉ-टनल तकनीक से बुवाई करें। साथ ही उठी हुई क्यारियों में बून्द-बून्द सिंचाई संयंत्र के साथ प्लास्टिक मल्ट का उपयोग करने से अगती फसलों की अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है तथा सर्दी से बचाया जा सकता है।

● **भिच** में सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु कीट दिखाई देने पर ऐसीफेट 75 एस.पी. 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 15 दिन के अंतराल पर तीन छिड़काव करें।

पुष्पोत्पादन

● **गेंदा** में ग्रीष्मकालीन फसल हेतु नर्सरी तैयार करें। एक हेक्टर क्षेत्रफल की पौध



हेतु 1 से 1.25 किलो बीज की आवश्यकता होती है। बीज बोने से पूर्व थाइरम या कैप्टान या कार्बेन्डेजिम 2.0-2.5 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें। शीतकालीन फसल में यह फूल खिलने का समय रहता है। अतः 2-3 दिनों के अन्तराल पर पूरे खिले हुए फूलों को तोड़कर विक्रय हेतु बाजार भेजें।

मसाले

● **घनिये** में प्रथम सिंचाई, निराई-गुड़ाई के 30-35 दिन बाद व दूसरी सिंचाई 55-60 दिन पर करें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।

परख

नवम्बर, 2015 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये विजेता कृषक का नाम है-

1. श्री रामनारायण कुम्हार पुत्र श्री गिदतु लाल कुम्हार कमरा नं. 82, टी.एस.वी. हॉस्टल, राजस्थान कृषि महाविद्यालय उदयपुर (313001)

इस माह के प्रश्न हैं -

प्र.1 इसबगोल के पौधे में औषधीय उपयोगी भाग कौनसा है?

प्र.2 "खेती की बातों" अखबार का वार्षिक सदस्यता शुल्क कितना है?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब - उप निदेशक, कृषि (सूचना), कमरा नम्बर 118, कृषि आयुक्तालय, पंत कृषि भवन, जयपुर-302005



प्रथम सिंचाई पर 44 किलो यूरिया तथा शेष 44 किलो यूरिया फूल आते समय दें।

● **जीरे** में दूसरी सिंचाई, बुवाई के एक सप्ताह बाद जब बीज फूलने लगे तब करें ताकि अंकुरण पूर्ण हो सके।

● **सौंफ** में फूल आते समय 66 किलो यूरिया प्रति हेक्टर की दर से फसल में छिटक कर सिंचाई करें।

● **मेथी** में प्रथम निराई-गुड़ाई 30 दिन बाद तथा दूसरी 55-60 दिन की फसल होने पर करें।

खेती की नई जानकारी के लिए....

बात करें

किसान कॉल सेन्टर
नि.शुल्क टेलीफोन
1800 180 1551 या 1551 पर
(प्रा. 9 से रात्रि 10 बजे तक)

देखें

जयपुर दूरदर्शन पर
खेती की बातें • पुस्तक सार्व 7.30 बजे
कृषि दर्शन • सोमवार से बुधवार
सायं 5.30 बजे

सुनें

"खेती की बातों" मासिक अखबार
आवृत्तकालीन की सभी केंद्रों में
अतिरिक्त सायं 7.45 से 8.15 तक

पढ़ें

"खेती की बातों" मासिक अखबार
आंक से संग्रहण के लिए सायं 12
बजे के आखिरी शुल्क विक्रयण कृषि
कार्यालय में जमा करावें।

मिलें

गुजराती कृषि कार्यालय या
जिले के कृषि विभाग जेठ-से

लॉग ऑन करें

www.krishi.rajasthan.gov.in
(विभागीय वेबसाइट)
www.farmer.gov.in
(सेक्टर व जिला अस्तित्व)

वैज्ञानिक तकनीक से करें टमाटर की नर्सरी तैयार

टमाटर की गर्मी की फसल के लिए दिसम्बर-जनवरी में नर्सरी तैयार करें। प्रति हेक्टर 400-500 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। संकर किस्मों के लिए प्रति हेक्टर 150-200 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। एक



हेक्टर फसल की नर्सरी तैयार करने के लिए जैची उठी हुई एक मीटर चौड़ी तथा 5 मीटर लम्बी 25 क्यारियों की आवश्यकता होती है। बीजों को बुवाई पूर्व 2 ग्राम कैप्टान या 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर 5-7 सेंटीमीटर दूरी पर कतारों में बोयें तथा बुवाई पूर्व क्यारियों में 8-10 ग्राम कार्बोथूरॉन 3 प्रतिशत कण प्रति वर्गमीटर की दर से भूमि में मिलायें। 40 मैश जाल का विषाणुजनित बीमारियों की रोकथाम के लिए उपयोग करें।

दैनिक जीवन में औषधीय पादपों का उपयोग

हमारा देश सहस्रों सदियों से ऋषि मुनियों की तपोभूमि रहा है, जिनके द्वारा हजारों वर्षों के अथक प्रयासों से बहुमूल्य वनस्पतियों को पहचान कर मानव के लिए जीवन रक्षक औषधियों के रूप में उपयोग में लिया जाता रहा है, जो कि हमारी वर्तमान आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति का आधार भी है।

तुलसी

उपयोगी भाग— पत्तियाँ एवं बीज— तुलसी के पत्तों का सेवन करने से अनेक असाध्य रोगों का निदान होता है। रोगों का विनाश करने के लिए यह एक दिव्य औषधि है। मलेरिया, दमा, कफ, खांसी, उल्टी, गठिया, सफेद दाग, रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा का अधिक होना आदि रोगों में तुलसी का सेवन अत्यन्त लाभकारी होता है। सम्पूर्ण पौधा औषधीय गुणों वाला होता है, लेकिन इसके तेल का अधिक उपयोग किया जाता है।

नीम

उपयोगी भाग— पत्ती एवं बीज— इस पेड़ के प्रत्येक भाग का प्राचीनकाल से विभिन्न प्रकार से औषधीय उपयोग किया जा रहा है। नीम के बीज, तेल और खली का उपयोग औषधि में एवं पर्यावरण सम्मत जैविक खेती में किया जाता है। नीम की पत्ती एवं निम्बोली से कीटनाशक दवाईयों तैयार की जाती हैं, नीम से जैविक साबुन, शेम्पू, फेसवॉश, बॉडी लोशन, क्रीम आदि तैयार किये जाते हैं। इसकी पत्तियों को गर्म पानी में उबाल कर नहाया जा सकता

है, जिससे शरीर कीटाणुओं से मुक्त होता है। इसकी कच्ची टहनियों को दातून के रूप में उपयोग में लाया जाता है, जो माउथ फ्रेशनर का भी काम करती है।

सफेद मूसली

उपयोगी भाग— कंदिल जड़— प्रकृति का अमूल्य उपहार कही जाने वाली सफेद मूसली का उपयोग विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों जैसे— यूनानी, एलोपैथिक एवं आयुर्वेदिक में दवाईयों बनाने में किया जाता है। इसकी जड़ों से विभिन्न प्रकार के शक्तिवर्धक टॉनिक बनाये जाते हैं। मानव शरीर में किसी भी प्रकार की शिथिलता को दूर करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। सफेद मूसली का उपयोग धात्री माताओं का दूध बढ़ाने तथा प्रसव के बाद होने वाले रोगों के लिए औषधियों बनाने में किया जाता है।

अश्वगंधा

उपयोगी भाग— जड़— इसमें पाये जाने वाले एल्केलॉइड्स विथेनिन और सोमनीफेरोन का उपयोग यूनानी तथा आयुर्वेदिक औषधियों में किया जाता है। इसके अलावा इसकी जड़ों में निकोटिन, विथिनीनाइन एवं सोमनीन नामक एल्केलॉइड्स भी पाये जाते हैं। यह शक्ति वर्धक पौधे के रूप में जाना जाता है।

ग्वारपाठा

उपयोगी भाग— पत्ती— इसकी पत्तियों के गूदे को सूखाकर जमाया जाता है और विशेष प्रकार का पदार्थ बनाया जाता है,

जिसे एलुआ या मुसब्बर कहते हैं। इससे विभिन्न प्रकार की धातु, उपधातु रत्न और उपरत्न आदि की भस्में एवं आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण किया जाता है। जिनका उपयोग यकृत सूजन, कब्ज



बवासीर, उदरशूल, खांसी, कफ विकार, अग्नि दग्ध, घाव भरने, दांत दर्द, चर्म रोग आदि में किया जाता है। इसके रस द्वारा विभिन्न प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधन सामग्रियाँ भी बनाई जाती हैं। इसकी पत्तियों के रस से विभिन्न पेय पदार्थ भी तैयार किये जाते हैं।

ईसबगोल

उपयोगी भाग— बीज की भूसी— इसके बीज के ऊपर पाये जाने वाले छिलके (भूसी) का औषधीय महत्व है। इसका उपयोग कब्ज, दस्त, पेट की सफाई, बवासीर, अल्सर, आंत-पैचिस जैसी जटिल बीमारियों के उपचार में किया जाता है। ईसबगोल के बीजों में

अन्य बीजों की अपेक्षा कई गुणा पानी अवशोषित करने की क्षमता रहती है।

सोनामुखी

उपयोगी भाग— पत्तियाँ एवं फलियाँ— सोनामुखी की खेती बंजर भूमि एवं कम पानी में भी आसानी से की जा सकती है। एक बार इसका पौधा लगाने पर पाँच वर्षों तक फसल देता रहता है। इस पौधे पर कीट प्रकोप नहीं होता है और ना ही पशु नुकसान पहुँचाते हैं। इसका उपयोग पेट की बीमारियों में किया जाता है। इसकी पत्तियों में 2 से 3 एवं फलियों में 4 से 5 प्रतिशत सोनोसाइड पाया जाता है। इसका उपयोग अपच, बुखार, मलेरिया, अस्थमा, पीलिया आदि रोगों के निदान में किया जाता है।

रतनजोत

उपयोगी भाग— बीज— इसमें पाये जाने वाले तत्व में कैंसर प्रतिरोधक क्षमता पायी जाती है। इसका उपयोग कैंसर की दवाईयों बनाने में किया जाता है। इसके अलावा इसके बीजों का तेल लकवा, गठिया, खुजली, दाद आदि बीमारियों में दवा के रूप में काम में लिया जाता है। औषधियों के अलावा इसका उपयोग पशु आहार, कुक्कुट आहार, कीटनाशक, रंगाई में साबुन बनाने, सौन्दर्य प्रसाधन में किया जाता है। रतनजोत के बीजों का तेल बायोडीजल (जैविक ईंधन) के रूप में उपयोग में लिया जाता है। इसका तेल आने वाले समय में ईंधन के रूप में मील का पत्थर साबित होगा।

खुरपका-मुंहपका रोग : घबराएं नहीं, बचाव करें

यह मुख्यतः गाय, भैंस, बकरी एवं शूकर प्रजाति के पशुओं में होने वाला विषाणु जनित, अत्यन्त संक्रामक, छूतदार एवं अतिव्यापी रोग है। छोटी उम्र के पशुओं में यह रोग जानलेवा भी हो सकता है। संकर नस्ल के पशुओं में यह रोग अत्यन्त तीव्रता से फैलता है। इस रोग में मृत्युदर तो कम है, लेकिन दुधारु पशुओं का दुग्ध उत्पादन बहुत कम हो जाता है। साधारणतया सर्दी शुरु होने पर जब वातावरण में नमी भी अधिक होती है तो ऐसी परिस्थितियों में यह रोग अधिक होता है। दिसम्बर से फरवरी माह में इस रोग का प्रकोप सबसे अधिक होता है।

रोग का फैलाव

- दूषित चारे, दाने व पानी के सेवन से।
- रोगी पशु की विछावन के सम्पर्क में आने से।
- गोबर एवं पेशाब से।
- दुधारु पशुओं के ग्वाले से।
- हवा के माध्यम से।

रोग के लक्षण

- 105-107 डिग्री फॉरेनहाइट तक तेज बुखार।
- मुँह, मसूड़े व जीभ पर छाले, लगातार लार का गिरना।
- पैरों में खुरों के बीच छाले जिससे पशु का लंगडाना। पैर के छालों में जखम एवं कीड़े पड़ना।
- दुधारु पशु के थनों एवं गादी में छाले पड़ने से थनैला रोग।
- कुछ पशुओं में हाँफने की बीमारी होना।
- दुधारु पशुओं में दूध के उत्पादन में एकदम कमी।

रोग का उपचार

- मुँह एवं खुर के घावों की प्रतिदिन सुबह-शाम फिटकरी या लाल दवा के हल्के घोल से सफाई करें।
- घाव में कीड़े पड़ने पर फिनाइल तथा मीठे तेल की बराबर मात्रा मिलाकर उपयोग करें।
- उपरोक्त सामग्री उपलब्ध न होने पर नीम के पत्ते उबालकर ठंडे किये पानी से



जखम साफ करें।

- विषाणुओं द्वारा उत्पन्न रोगों का सही इलाज अभी तक नहीं खोजा जा सका है। अतः बचाव ही उपचार है।
- इस रोग से पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाने से अन्य रोगों के बचाव हेतु पशु चिकित्सक की सलाह से उपचार करावें।
- रोग की रोकथाम व बचाव
- पशुओं में प्रतिवर्ष नियमित रूप से टीकाकरण करावें। टीका लगवाने का उचित समय नवम्बर-दिसम्बर एवं जून-जुलाई माह है।
- यह रोग महामारी के रूप में फैलता है अतः रोगी पशु को स्वस्थ पशु से तुरन्त अलग करें।

- पशु को बांधकर रखें व घूमने-फिरने न दें।
- बीमार पशु के खाने-पीने का प्रबंध अलग ही करें।
- रोगी पशुओं को नदी, तालाब, पोखर आदि में पानी न पीने दें।
- पशु को सूखे स्थान पर बांधें। कीचड़, गीली व गंदी जगह पर नहीं।
- रोगी पशु को सम्भालने वाले व्यक्ति को बाड़े से बाहर आने पर हाथ-पैर साबुन से

अच्छी तरह से धो लेने चाहिये।

- खुरपका-मुँहपका रोग से संक्रमित पशु का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन नहीं करें।
- रोग की सूचना तुरन्त पशु चिकित्सालय में दें।
- जहाँ-जहाँ पशु की लार आदि गिरती है, वहाँ पर कपड़े धोने का सोडा/चूना इत्यादि डालते रहें, यदि संभव हो तो फिनाइल से धोना भी लाभप्रद होता है।

सतत कृषि क्रियाओं द्वारा प्रभावी खरपतवार नियंत्रण

कृषि के बदलते परिवेश, सघन कृषि तथा मृदा ह्रास एवं पर्यावरण प्रदूषण के कारण सतत कृषि उत्पादन का अस्तित्व खतरे में है। जलवायु परिवर्तन एवं मजदूरी की बढ़ती लागत एवं रसायनों के दुष्प्रभाव ने फसलों में खरपतवार नियंत्रण को दिन प्रति दिन महंगा एवं चुनौतिपूर्ण बना दिया है।

कृषि विशेषज्ञ खेती में रसायनों के दुष्प्रभाव को कम करने व कृषि की लागत घटाने के लिए प्रयासरत हैं। समयबद्ध एवं लाभकारी कृषि क्रियाओं को अपनाकर ही खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

प्रमुख सतत कृषि क्रियाएं निम्नानुसार हैं—

फसलों का चयन— जिन खेतों में खरपतवारों का प्रकोप अधिक हो वहाँ पर प्रतिभागी फसलों एवं किस्मों का चयन

करना लाभकारी रहता है। प्रतिभागी फसलें शीघ्र अंकुरित होने वाली, अधिक



अंकुरण प्रतिशत वाली तथा शीघ्र जड़ एवं वानस्पतिक वृद्धि वाली होनी चाहिए। रबी की प्रमुख प्रतिभागी फसलें चना, राजमा, सरसों, रिजका, बरसीम आदि हैं।

फसल चक्र— समरथाग्रस्त एवं फसल विशेष खरपतवारों का नियंत्रण प्रभावी शेष पृष्ठ 4 पर

ऐसे मंगवायें "खेती से बाता"

घर बैठे वर्षभर खेती से बाता अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय, कमरा नं.-250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/- रुपये का मनीऑर्डर भेजें। स्वयं का साफ-साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. JaipurCity/409/2015-17

आर.एन.आई - 70296/98



प्रेषक-

उप निदेशक कृषि (सूचना)

118, पंत कृषि भवन,

जयपुर-302005

प्रेषिति-

बीजीय मसाला फसलों में समन्वित कीट-रोग प्रबन्धन

राजस्थान मुख्य बीजीय मसाला उत्पादक प्रदेश है। इन फसलों की खेती के लिए अनुकूल जलवायुवीय परिस्थितियों-विशेषकर पकने के समय शुष्क (कम आर्द्रता) एवं ठण्डे व साफ (बादल रहित) मौसम के कारण राज्य में बीजीय मसालों की बहुत बड़े क्षेत्र में खेती की जा रही है। राजस्थान में बीजीय मसाला फसलों में जीरा, धनियाँ, सौंफ व मेथी का प्रमुख स्थान है। इनमें प्रमुख कीट व रोगों के नियंत्रण का विवरण निम्नानुसार है -

मोयला (चेंपा) : यह कीट पौधे के कोमल भाग से रस चूस कर हानि पहुंचाता है। इसका प्रकोप प्रायः फसल में फूल आने के समय प्रारम्भ होता है। मोयला कीट के जैविक नियंत्रण के लिए नीम आधारित कीटनाशियों का उपयोग करें अथवा गोमूत्र 10 प्रतिशत + लहसुन अर्क 2 प्रतिशत + निम्बोली अर्क 2.5 प्रतिशत का मिश्रित छिड़काव दो बार करें। रासायनिक नियंत्रण हेतु डायमिथोएट 30 ई.सी. या मैलाथियोन 50 ई.सी. 1 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी या ऐसीफेट 75 एस.पी. 750 ग्राम प्रति हेक्टर या इमिडाक्लोप्रिड 200 एस.एल. 25 ग्राम सक्रिय तत्व या थायोमिथोक्जाम 25 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 100 ग्राम प्रति हेक्टर की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव दोहरायें।

छाछ्या (पाउडरी मिल्ड्यू) : रोग का प्रकोप होने पर पौधों की पत्तियों पर सफेद चूर्ण दिखाई देने लगता है। यदि रोग का प्रकोप जल्दी हो गया हो तो बीज नहीं बनते हैं। इसके नियंत्रण हेतु 5 प्रतिशत नीम अर्क का छिड़काव 10 दिन



के अन्तराल पर दो या तीन बार करें। गन्धक के चूर्ण का 25 किलो प्रति हेक्टर की दर से मुरकाव करें या घुलनशील गन्धक चूर्ण 2.5 किलो प्रति हेक्टर अथवा कैराथेन एल.सी.1 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव दोहरायें।

झुलसा (ब्लाइट) : फसल में फूल आना शुरू होने के बाद आकाश में बादल छाये रहें, तो इस रोग का प्रकोप निश्चित है। रोग से पौधों की पत्तियाँ एवं तनों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं तथा पौधों के सिरे झुके हुए नजर आने लगते हैं। नियंत्रण हेतु बुवाई के 30-35 दिन बाद फसल पर 2 ग्राम टॉप्सिन एम. या

मैन्कोजेब या जाइनेब दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें अथवा रोग के लक्षण दिखाई देने पर डाईफनोकोना जोल (स्कोर 25 ई.सी.) का 0.5 प्रतिशत (5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का घोल बनाकर छिड़काव करें। दूसरा व तीसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर दोहरायें।

तना पिटिका रोग (स्टेम गॉल/ लॉगिया रोग) : रोग के कारण पत्तियों व तनों पर फफोले बन जाते हैं। नमी की उपस्थिति में बीमारी का प्रकोप बढ़ जाता है। बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर बेलिटान 1 ग्राम या कैलेक्सीन 0.1 प्रतिशत (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव 15-20 दिन के अन्तराल पर करें।

तुलासिता (डाउनी मिल्ड्यू) : इस रोग में पत्तियों की ऊपरी सतह पर पीले धब्बे दिखाई देते हैं व नीचे की सतह पर फफूंद की वृद्धि दिखाई देती है। नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 15 दिन बाद छिड़काव दोहरायें।

उखटा (विल्ट) : इस रोग का प्रकोप पौधों की किसी भी अवस्था में हो सकता है, लेकिन पौधों की छोटी अवस्था में प्रकोप अधिक होता है। रोग से प्रभावित पौधे हरे ही मुरझा जाते हैं। नियंत्रण हेतु गर्मी में गहरी जुताई करें। रोगग्रसित खेत में 3-4

साल तक मसाला फसलें नहीं बोयें। बीजों को ट्राइकोडर्मा कल्चर 4-6 ग्राम अथवा कार्बण्डेजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें। रोग रहित फसल से प्राप्त बीज ही बोयें।

पृष्ठ 3 का शेष (सतत कृषि.....)

फसल चक्र अपनाकर किया जा सकता है। सरसों में ओरोबंकी, रिजके में अमरबेल, गेहूँ में गुल्ली डंडा व जंगली जई आदि का प्रकोप फसल चक्र के माध्यम से ही कम किया जा सकता है। रिजके में अमरबेल का नियंत्रण उस खेत में जई उगाकर किया जा सकता है। सरसों की जगह गेहूँ व जौ उगाकर ओरोबंकी का निदान किया जा सकता है।

उचित खाद का उपयोग:- खरपतवारों का प्रकीर्णन (प्रसार) खेतों में गोबर की कच्ची खाद, हरी खाद के द्वारा होता है। खरपतवारों के बीज, राइजोम, नट, ट्यूमर, बल्ब आदि खाद के साथ खेत में फैल जाते हैं। खेत में कम्पोस्ट विधि से तैयार गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग कर खरपतवारों का प्रकोप काफी हद तक कम किया जा सकता है।

फसलों के बोने का समय व पलेवा:- फसलों एवं किस्मों का बुवाई समय निश्चित होता है। उसी अनुरूप फसलों की बुवाई कर फसलों को प्रतिभागी बनाया जा सकता है। देशी से बोई गई फसलों की बढ़वार कम होती है। फसलों को बोने से 10-15 दिन पूर्व पलेवा देकर खरपतवारों को समय से पूर्व उगाकर जुताई करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं।

बीज दर तथा पौधे से पौधे एवं कतार से कतार की दूरी:- फसलों की उचित बीज दर का उपयोग एवं निश्चित अन्तराल पर बुवाई से फसलों में अधिक प्रतिस्पर्धा आती है। प्रतिभागी फसलें खरपतवारों को पनपने नहीं देती हैं। अधिक या कम बीज दर फसलों के लिए नुकसानदायक एवं खरपतवारों की वृद्धि के लिए सहयोगी होती है।

जैव विविधता बढ़ेगी और पर्यावरण संरक्षण होगा।

अनुदान -

विभाग द्वारा इको फ्रेण्डली लाईट ट्रेप (हस्तचलित उपकरण) पर सामान्य वर्ग के कृषकों को कीमत का 40% या अधिकतम 600 रुपये प्रति उपकरण एवं अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति/ लघु/ सीमान्त/ महिला कृषकों को कीमत का 50% या अधिकतम 800 रुपये प्रति उपकरण अनुदान देय है।

स्व(चा)धिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक उप निदेशक, कृषि (सूचना), कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक - अमराज शर्मा
सम्पादक - डॉ. पूजम चौधरी
परामर्श - जे.पी. यादव
डिजाइनर - आर. मैसी

लाईट ट्रेप - समन्वित कीट नियंत्रण की सुरक्षित एवं लाभकारी तकनीक

फसलों को हानिकारक कीटों से बचाने हेतु सामान्यतया कृषक कीटनाशी रसायनों का अधिक तथा अनुचित मात्रा में उपयोग करते हैं। जिसके फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण, मनुष्य, जीव-जन्तुओं पर हानिकारक प्रभाव एवं कीटों में कीटनाशी रसायनों के प्रति प्रतिरोधकता उत्पन्न हो रही है।

उक्त परिणामों को देखते हुए समन्वित नाशीजीव प्रबन्धन (आई.पी.एम.) तकनीकी को अपनाया जाना आवश्यक है जिससे कीट/व्याधि नियंत्रण में रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग में कमी हो। आई.पी.एम. की कड़ी में लाईट-ट्रेप (प्रकाश-यंत्र) कीट नियंत्रण की एक महत्वपूर्ण यांत्रिक विधि है जिसमें खर्चा कम एवं लाभ अधिक है।

लाईट ट्रेप कैसे कार्य करता है -

लाईट ट्रेप में एक बल्ब होता है, जिसको जलाने के लिए बिजली/बैटरी की आवश्यकता होती है। जिससे कीड़े

आकर्षित होकर बल्ब से टकराकर इसके नीचे लगी कीप में गिरकर कीट संग्रहण कक्ष में इकट्ठे हो जाते हैं। कीट संग्रहण कक्ष सुरक्षा कवर से ढका होता है जो की नीचे से खुला होता है। कीट संग्रहण कक्ष एवं सुरक्षा कवर के बीच दो लाईट लगी होती है, जो संग्रहण कक्ष से लाभदायक कीड़ों को आकर्षित करने में सहायक होती है। शत्रु कीट संग्रहण कक्ष में फसे रह जाते हैं जिनको आसानी से नष्ट किया जा सकता है।

खेत में लाईट ट्रेप कैसे स्थापित करें?

- खेतों में लाईट ट्रेप को फसल की ऊँचाई से 2 फीट ऊपर लगाना चाहिये।
- शाम के 7:00 से 10:00 बजे तक ट्रेप में लाईट चालू रखनी चाहिये।
- एक हेक्टर क्षेत्र के लिए एक लाईट ट्रेप पर्याप्त रहता है। इसको खेत में बीचों-बीच लगाना चाहिये।
- कीट संग्रहण कक्ष में एकत्रित कीड़ों

की गणना कर हटा/मार देना चाहिये। कीटों को मारने के लिए डाईक्लोरोवॉस (DDVP) 76 प्रतिशत ई.सी नामक रसायन में रूई का फोआ डुबोकर उपयोग में लिया जा सकता है।

• कीट संग्रहण कक्ष से कीटनाशी रसायन में डूबे हुए रूई के फोए को उपयोग के तुरन्त बाद हटा देना चाहिये एवं इसके बाद फिल्टर को साफ करना चाहिए।

लाईट ट्रेप से लाभ -

- फसलों, सब्जियों, फलों, मशरूम, जंगली पेड़ों आदि के मुख्य कीटों को लाईट ट्रेप का उपयोग कर मास ट्रेपिंग की जा सकती है। मास ट्रेपिंग से कीटों की संख्या कम होती है।
- कीट संग्रहण कक्ष में छिद्र होते हैं जिससे लाभदायक कीड़े हानिकारक कीटों से अलग हो जाते हैं।
- लाईट ट्रेप एक बार क्रय करने के बाद इसका उपयोग कई वर्षों तक किया जा सकता है एवं लाभदायक कीटों को बचाने के लिए किसान अकेला एवं समूह में प्रयोग कर सकता है।
- कीटनाशी रसायनों का उपयोग कम होगा फलस्वरूप खर्चा कम होगा तथा

